अध्याय ८

"उपसंहार"

अध्याय : 8

उपसंहार

हिन्दी साहित्य में सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन "अज्ञेय" का नाम बहुत प्रसिध्द हो चुका है। "अज्ञेय" का हिन्दी साहित्य को महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वे कवि, लेखक, पत्रकार और क्रांतिकारी विचारक थे। उनकी साहित्य-वस्तु की प्रेरणा का स्त्रोत समाज का एक विशिष्ट वर्ग है। उनकी रचनाओं में मनोवैज्ञानिकता दिखाई देती है, साथ ही अस्तित्त्ववाद का स्वर भी उभरकर आया है। व्यावहारिक और रहस्यवादी व्यक्तित्त्ववाले वात्स्यायन हमेशा अलग-अलग लोगों की दृष्टि में अलग-अलग रूपों में प्रकट होते रहे। उनकी रचनाओं के द्वारा समकालीन सामाजिक चेतना प्रकट हुई है।

इस लघु-शोध-प्रबंध में मुख्य रूप से स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य के लेखक "अज्ञेय" और उनके उपन्यास की विशेषताओं एवं तत्त्वों को लक्ष्य बनाकर अपनी बात कही कई है। सुविधानुसार यह समस्त अध्ययन आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रारम्भ में अज्ञेय का जीवनवृत्त तथा उनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व की झाँकी मिलेगी। "अज्ञेय" बहुत श्रमशील लेखक थे। "अज्ञेय" के उपन्यासों में चित्रित मानवजीवन के तत्त्वज्ञान का अध्ययन ही उनका प्रमुख विषय रहा है। इनके क्रांतिकारी जीवन से ही लेखन की शुरूआत हो गई। "अज्ञेय" के व्यक्तित्त्व में विदवत्ता तथा गंभीरता के साथ सरलता का भी संयोग हुआ है। उन्होंने काव्य संकलन, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विविध क्षेत्रों में अपने पांडित्य एवं प्रतिभा का दर्शन करा

दिया है। अज्ञेय के उपन्यास साहित्य में आधुनिक युग का यथार्थ पूर्ण रूप से प्रतिबिंबित दिखाई देता है।

"अज्ञेय" का उपन्यास साहित्य भारतीय जनजीवन, भारतीय जनजीवन की चेतना तथा विषमताओं आदि का यथार्थ चित्रण करता हैं। "अज्ञेय" के "अपने-अपने अजनबी" उपन्यास में मृत्यु क्षणों के संदर्भ में मानव-मन का विश्लेषण किया गया है। इसका परिचय मैंने उसमें चित्रित किया है। उनके "शेखर : एक जीवनी" उपन्यास में व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि चर्चित है। इसमें व्यक्ति के विचारों को सबसे ऊपरी, महत्त्व का स्थान दिया गया है। "नदी के द्वीप" उपन्यास में आधुनिक नारी के अंतर्मन की गहनतम प्रवृत्तियों एवं भावनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण है। इन सब उपन्यासों का सामान्य परिचय इसमें मैंने संकलित किया है।

उसके बाद "अज्ञेय" के "अपने अपने अजनबी" उपन्यास के कथासौष्ठव पर प्रकाश डाला गया है। यह "अज्ञेय" का तीसरा और अंतिम उपन्यास है। इसकी कथावस्तु तीन अध्यायों में लिखी गयी है। पहले अध्याय के अंतर्गत योके और सेल्मा के संयुक्त जीवन की कथा वर्णित है और दूसरे में अतीत की बातों का उल्लेख तो तीसरे में योके ने अपने जीवन का विस्तारपूर्वक परिचय दिया है। "अपने अपने अजनबी" की कथावस्तु में पर्याप्त नवीनता है। इसमें पात्रों की अन्तरमन की अनुभूतियों का विश्लेषण किया है। जीवन सर्वदा ही अन्तिम कलेवा है। जो जीवन देकर खरीदा गया है और जीवन जलाकर पकाया गया है और जिसका साझा करना ही होगा क्योंकि वह अकेले से गले उतारा ही नहीं जा सकता, अकेले वह भोगे भुगता ही नहीं। जीवन छोड़ ही देना होता है कि वह बना रहे और भर-भर कर मिलता रहे। मृत्यु के प्रति यह अज्ञेय का आशावादी दृष्टिकोण है।

"अपने अपने अजनबी" यह उपन्यास वस्तुअन्विति का सुन्दरतम उदाहरण है। प्रायोगिक नव्यता की प्रधानता इस उपन्यास की कथावस्तु में पायी जाती

है। हिन्दी उपन्यासों के वस्तुविधान के क्षेत्र में एक नवीन और मौलिक उपलब्धि है। प्रयोग की दृष्टि से यह अत्यन्त मौलिक एवं क्रांतिकारी रचना है। यह परम्परागत कथ्य एवं शिल्प से पूर्णतः मुक्त है। इस उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता और अस्तित्ववाद दोनों का सुन्दर समन्वय है। व्यक्ति के अजनबीपन, अकेलेपन और अलगाव को इसमें अत्यन्त मार्मिकता से एवं कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। इसमें विविध प्रणालियों का सफल प्रयोग किया गया है। उपन्यास की कथावस्तु के अंतर्गत मौलिकता, मनोरंजनकता, सत्यता, सम्बध्दता एवं निर्माण कौशल, स्वाभाविकता तथा व्यापकता आदि गुणों का समावेश किया गया है। कथा में संगठनात्मक सौष्ठव आद्यन्त परिलक्षित होता है।

कथावस्तु के बाद पात्र संरचना पर चर्चा की गयी है। इस उपन्यास में पाँच पात्रों का उल्लेख आया हुआ हैं लेकिन मुख्य पात्र केवल दो ही हैं - 1· सेल्मा, और 2· योके। यान एकेलोफ, फोटोग्राफर और जगन्नाथन आदि गौण पात्र हैं। इसके अतिरिक्त पॉल नामक एक पात्र का भी उल्लेख मिलता है। अज्ञेय ने सेल्मा और योके के माध्यम से जीवन की दो प्रमुख समस्याओं को चित्रित किया है, जो पूरे विश्व के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इस उपन्यास की सेल्मा अपने विचारों से योके को भी आक्रांत कर लेती है। सेल्मा अपने जीवन में दो बार मृत्यु के साक्षात्कार का अनुभव लेती है। वह अंत में कैंसर से पीडित होने के कारण उसका व्यक्तित्त्व कुंठित हो गया है। वह बाढ़ में घिरे पुल पर भयान्क स्थिति में अटक जाती है। तब उसके साथियों से उसने जो व्यवहार किया था उससे वह स्वार्थी, लोलुप एवं चतुर व्यवसायी नजर आती है। वह पुरूषों के प्रति ईर्ष्या रखनेवाली है। सेल्मा अहंपूर्ण एवं आत्मकेन्द्रित नारी है। साथ ही ईश्वर पर अधिक विश्वास रखनेवाली नारी हैं।

सेल्मा के विचारों के विरूध्द योके के विचार है। योके जीवन के प्रति अपनी अलग दृष्टि रखती है। सेल्मा के सान्निध्य में रहकर जीवन के प्रति रूक्ष

बन जाती है। मगर वह कभी जीवन से पूरी तरह विरक्त नहीं होती। जीवन से संघर्ष करने की लालसा उसमें हमेशा विद्यमान रहती है। योके जीवन संघर्ष का प्रतीक है। वह एक साहसी युवती है। परन्तु बर्फ के नीचे दबे काठ घर में बन्दी हो जाने के बाद उसे मृत्यु से डर लगने लगता है। योके का दृष्टिकोण अनिश्वरवादी दृष्टिकोण है।

पात्र एवं चरित्रचित्रण की दृष्टि से "अज्ञेय" का "अपने अपने अजनबी" उपन्यास एक सफल उपन्यास है। इस कृति के अंतर्गत मानव जीवन के दो शाश्वत मूल्यों को जीवन और मृत्यु को कथात्मक रूप प्रदान किया है और उसे पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

"अपने अपने अजनबी" उपन्यास के कथोपकथन या संवादों का संयोजन भी कुशलतापूर्वक किया है। इस उपन्यास के कथोपकथन कथावस्तु के विकास में सहायक बन पडे हैं। कुछ संवाद सूक्ष्म आकार वाले हैं लेकिन उनके अर्थो में व्यापक विस्तार और गहनता दिखाई निहित है। पात्रों के चरित्रांकन में कथोपकथन सहायक हुए हैं। कथोपकथन के द्वारा पात्रों की मनःस्थिति का सही अंकन हुआ हैं। यह कथोपकथन लेखक के मन्तव्य को स्पष्ट करनेवाले रहे है। "मृत्यु के साक्षात्कार की स्थिति का निरूपण करना" यह लेखक का मन्तव्य तथा उद्देश्य कथोपकथन द्वारा स्पष्ट हो गया है।

कुछ नवीन संवाद प्रणालियों का प्रयोग इसमें किया गया हैं। अन्तर्विवाद की योजना विशेष रूप से दिखाई देती हैं। कथोपकथन चुस्त, चुटकीले, संक्षिप्त, सरस तथा रोचक बन पडे हैं। कलात्मक विशेषताएँ इसके कथोपकथन में दिखाई देती हैं। प्रसंग, घटना एवं वातावरण के अनुकूल कथोपकथन आये हुए है। "अपने अपने अजनबी" के कथोपकथन उद्देश्य को सिध्द करनेवाले हैं। आंतरिक स्थितियों का थोड़े में ही किन्तु सार्थक शब्दों मे स्पष्टीकरण किया गया हैं।

"अज्ञेय" की भाषा में विशिष्टत तथा जीवंतता है। "अपने अपने अजनबी" के अंतर्गत पात्रों की मनःस्थितियों को अंकित करनेवाली भाषा का प्रयोग किया गया है। इसकी भाषा अपेक्षाकृत सरल है। "अपने अपने अजनबी" की भाषा में तत्सम, तद्भव, स्थानीय या देशज, तथा अरबी फारसी और अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग मिलता है। उपन्यास में चित्रित विदेशी वातावरण के अनुकूल स्वाभाविक भाषा का प्रयोग किया गया है। भाषा शैली में एक प्रकार का अनूठापन दिखाई देता है। मुहावरे, सूक्तियाँ तथा अलंकारों की योजना सुगठित होने के कारण भाषा सौन्दर्य अनूठा बन पडा है। "अपने अपने अजनबी" की भाषा पात्र एवं प्रसंगानुकूल है। "अपने अपने अजनबी" उपन्यास में विविध शैलियों का प्रयोग किया गया है। इन शैलियों के द्वारा उपन्यास के दृश्यों की वर्णनात्मकता, पात्रों की मनोविश्लेषणात्मकता तथा मन के अन्तर्द्वन्द का सफल चित्रण मिलता है।

"अपने अपने अजनबी" उपन्यास का नामकरण पूर्णतः उपयुक्त एवं सार्थक है। यह नामकरण दो आधारों पर किया गया है। एक तो वह लाक्षणिक एवं व्यंजनात्मक है साथ ही साथ वह कृति के उद्देश्य या मूल भाषा के आधारपर हुआ है। मृत्यु की भयंकरता व्यक्ति में महान परिवर्तन ला देती है और प्रियजन भी अजनबी हो जाते हैं, तथा अनपहचाने अजनबी व्यक्ति अपने आत्मीय बन जाते हैं यह दिखाना इसका उद्देश्य है। वह उद्देश्य "अपने अपने अजनबी" इस नामकरण के द्वारा स्पष्ट हो चुका है। "अपने अपने अजनबी" उपन्यास का नामकरण सर्वथा उपयुक्त और व्यंजनात्मक है।

नामकरण के बाद "अपने अपने अजनबी" उपन्यास के उद्देश्य एवं जीवन दर्शन को व्यक्त किया गया है।जिसमें अस्तित्ववाद क्या है? अस्तित्ववाद किन तत्त्वों पर आधारित है? तथा "अपने अपने अजनबी" अस्तित्ववादी जीवनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में किस प्रकार है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है। अस्तित्ववाद अनीश्वरवादी दर्शन है। अस्तित्ववादियों की दृष्टि में मृत्यु ही सत्य है। जीवन के प्रति वैयक्तिक दृष्टिकोण की प्रधानता याने अस्तित्ववाद। अस्तित्ववाद अनीश्वरीय

और अनास्थात्मक सह-जीवन की परिस्थितियों के परिणामों को प्रस्तुत करने का प्रयास है। इसले, हैडेगर और कीर्केगार्ड जैसे विद्वान इस अस्तित्त्ववाद के प्रवर्तक हैं। व्यक्तिगत उत्तरदायित्त्व का बोध और मानवीय कर्तव्य चेतना अस्तित्त्ववाद का मूल सारतत्त्व है।

अस्तित्त्ववाद को माननेवाले विचारक ईश्वर में विश्वास नहीं रखते। वे ईश्वर को व्यक्ति की स्वच्छन्दता तथा आत्मनिर्भरता में बाधक समझते हैं। मृत्यु की आशंका से उत्पन्न भय, त्रास, निराशा तथा पीड़ा आदि अस्तित्त्ववादी दर्शन के मुख्य तत्त्व बन गये हैं।

"अपने अपने अजनबी" में "अज्ञेय" की अस्तित्त्ववादी जीवनदृष्टि दिखाई देती है। उद्देश्य तथा जीवन तत्त्वज्ञान की दृष्टि से अज्ञेय की रचना "अपने अपने अजनबी" एक श्रेष्ठ और सफल कृति है। आधुनिक जीवन में अस्तित्त्ववादी व्यक्ति दूसरों के साथ एक ऐसा अजनबीपन अनुभव करता है कि, उसके मानवीय सहानुभूति, ममता, करूणा आदि भाव व्यक्ति के जीवन में स्वार्थमय दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं। अपने स्वार्थ और अहं में लिप्त व्यक्ति निराशामय जीवन जीता हुआ अस्तित्त्व के प्रति सचेत रहता है।

"अपने अपने अजनबी" उपन्यास में "अज्ञेय" ने काल अनुभव संबंधी विचारों का सुंदर विवेचन किया है और दूसरी ओर यह उपन्यास मौत से साक्षात्कार का हिन्दी का सबसे पहला अस्तित्त्ववादी उपन्यास भी है। साथ ही अस्तित्त्ववादी जीवनदर्शन की यह संकुचित मनोवृत्ति, अहंभावना, स्वार्थमयता, ईश्वर और मृत्यु के प्रति अनास्था तथा मृत्यु का भय आदि आधुनिक मानव-जीवन के स्वार्थ पूर्ण दृष्टिकोण का परिचय देते हैं। इस दृष्टि से यह उपन्यास महत्त्वपूर्ण हैं।

निष्कर्षतः यह कहना उचित है कि उपन्यासकार "अज्ञेय" के "अपने अपने अजनबी" उपन्यास में चित्रित अस्तित्त्ववादी जीवन दृष्टि ही इस लेखन की प्रेरणा रही है। अस्तित्त्ववाद जैसे क्लिष्ट विचार का समर्थन करने में अज्ञेय

का "अपने अपने अजनबी" उपन्यास विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

"अज्ञेय" के उपन्यास का अनुशीलन अभी तक नहीं हुआ है। इसी वजह से मेरी बौध्दिकता के अनुसार मैंने इस लघु-शोध-प्रबंध में आपके अस्तित्ववादी उपन्यास "अपने अपने अजनबी" का मूल्यांकन करने का अल्पसा प्रयास किया है।

इस "अपने अपने अजनबी" उपन्यास का अस्तित्ववादी जीवन दर्शन की दृष्टि से अध्ययन करते वक्त मुझे इसमें मनोवैज्ञानिकता भी दिखाई दी। इसके अतिरिक्त मुझे यह भी दिखाई दिया कि, "अज्ञेय" के "शेखर : एक जीवनी" तथा "नदी के द्वीप" ये दोनो उपन्यास एम्.फिल. पदवी के अध्ययन के लिए शोधकर्ता के लिए उपयुक्त हो सकते हैं।